अच्छा-बुरा... सब उजागर

पत्रिका XPOSE

एक्सपोज

जबलपुर. गुरुवार 27 जून 2013

खुद के पैसे से खरीदते हैं जाल और नाव, जाल खरीदने के चक्र में नाविक

दबंग ठेकेदारों के जाल में मछुआरे

बरगी बांध के जलाशय पर निर्भर मछुआरों की स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। एक ओर मछुआरे इन मछलियों को बाजार से बेहद कम दर बेचने को मजबूर हैं, वहीं उन्हें मछली पकड़ने के लिए मूलभूत सुविधाएं भी नहीं मिल रही हैं। नियमानुसार मछुआरों को ठेकेदारों की ओर से जाल एवं नाव जैसी सुविधा दी जानी चाहिए, लेकिन वे सिर्फ पकड़ी गई मछली खरीद कर ही अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेते हैं। बांध में ठेका देने वाला मत्स्य पालन विभाग हो या मछुआरों का प्रतिनिधत्व करने वाली समितियां, सभी अपने फायदे से आगे बढ़कर कुछ नहीं देखते।

नाव के पास खड़े मछुआरे, अपनी व्यथा बताता मगरधा गांव का रामसेवक। (इंसेट में)

विस्तृत पढ़ें... पेज 2 पर

रास्ते में चुरा लेते हैं रेत

एक्सपोज रिपोर्टर @ जबलपुर

शहपुरा और गोटेगांव से आने वाली नर्मदा की रेत को रास्ते में डम्पर वाले ही चुरा लेते हैं। शहपुरा, सहजपुर और भेड़ाघाट चौराहे के आस-पास कहीं भी गाड़ी खड़ी करके डम्पर की रेत पर हाथ मार दिया जाता है। डम्पर के क्लीनर और ड्राइवर खुद ही फावड़े से रेत नीचे गिरा देते हैं। रेत की निश्चित मात्रा गिराकर गाड़ी आगे बढ़ जाती है। ऐसा काम हर चक्कर में करके काफी मात्रा में रेत स्टॉक कर ली जाती है। दरअसल रेत से भरे हाइवा और डम्पर पर आने वाले रेत को वर्गफीट के हिसाब से भरा और बेचा जाता है। ज्यादातर लोगों को वर्गफीट का गणित समझ में भी नहीं आता। इसी नासमझी का फायदा डम्पर ड्राइवर उठा लेते हैं। रेत चोरी करने वालों में ड्राइवर के साथी मौके पर गिरने वाली रेत को ठिकाने लगा देते हैं। थोड़ा-थोड़ा करके जब गाड़ी भर माल एकत्र हो जाता है, तो उसे बेच दिया जाता है।

inside

डांस क्वीन का जलवा
7. CINEMA गॉसिप्स

...कला पर हमला
3. MEGA स्टोरी

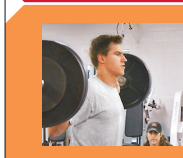

जिम में न करें ओवरट्रेनिंग
5. me.next...

कम बजट में बच्चों संग मस्ती
9. परिवार

Researchers develop 'Anti-Google Glass' technology

Washington . Researchers at the National Institute of Informatics (NII) in Japan have reportedly designed 'anti-Glass' specs which can block Google's high tech eye wear Google Glass' face recognition technology. The specs are fitted with 11 near infrared LEDs, which shine brightly making the camera unable to recognize a face, Fox News reports.

विस्तृत पढ़ें... पेज 10

पेज 1 से जारी

बाणसागर और मजदूरी के क्षेत्र में हो रहा मछुआरों का पलायन

जाल और नाव नहीं देते ठेकेदार

प्रवीण मालवीय @ जबलपुर

जाल से मछलियां निकालना और मछलियों को बेचकर मिली राशि से नाव-जाल की कीमत जुटाना। यह ऐसा चक्र है, जिसमें फंसे मछुआरों को मुक्ति मिलती नहीं दिख रही है। ठेकेदार उन्हें इस काबिल नहीं छोड़ते कि इसके अतिरिक्त कुछ सोच या कर सकें।

संसाधन जुटाने में खर्च हो जाती है कमाई

बरगी में मछलियों के कम होने और नाव-जाल के दाम लगातार बढ़ते जाने के बाद मछली पकड़ना घाटे का सौदा बनता जा रहा है। कहने को तो मत्स्य महासंघ की ओर से नाव और जाल पर अनुदान देने की योजना चलाई जाती है, लेकिन सरकारी फाइलों से केस पास कराकर अनुदान निकाल लाना गरीब, अनपढ़ मछुआरों के बस की बात नहीं रह गई है। अपनी कमाई से हजारों की नाव और जाल जुटाने के चलते इस धंधे में घाटा बढ़ता जा रहा है, लेकिन आजीविका का कोई विकल्प नहीं होने के चलते ये इसी पेशे में रहने को मजबूर हैं। 10 वर्ष पहले जहां एक नाव तीन से चार हजार रुपए में तैयार हो जाती थी, वहीं अब एक नाव बनवाने में पांच से सात हजार रुपए खर्च हो जाते हैं। यही हाल जाल का है। जाल 500 रुपए किलो से अधिक का पड़ता है। एक मौसम के बाद जाल लगभग खराब हो जाता है, तो एक- दो साल में ही नाव में भी मरम्मत का काम निकलने लगता है, जिसे चार-पांच साल बाद बदलना ही पड़ता है।

बाणसागर में मिल रही सुविधा

बरगी बांध के जलाशय पर निर्भर सैकड़ों मछुआरे बाणसागर के जलाशय की ओर रुख कर रहे हैं। मगरधा गांव के किशोरीलाल अहिरवार भी उन मछुआरों में एक हैं, जो बरगी से निराश होने पर जीविका के लिए कई महीने बाणसागर में काम करके लौटे हैं। किशोरीलाल कहते हैं, आप वहां दो बर्तन लेकर जाइए, नाव, जाल से लेकर चारे तक की सारी व्यवस्था ठेकेदार करता है। मछली मिलने पर बेचने के समय कुछ रुपए कटाने पड़ते हैं फिर भी यहां से कई गुना अच्छी व्यवस्था वहां है। कुछ ऐसी ही बात कठौतिया के भैरूं ने भी बताई।

> नाव और जाल के लिए मछुआरों को अनुदान देने की व्यवस्था है। उनके आवेदन करने पर यह सुविधा दी जाती है।
>
> **आर.के.गुप्ता,** प्रबंधक, मत्स्य महासंघ,

विजय नगर में आए दिन फंस जाते हैं भारी वाहन

'हिनहिनाता' रहा डम्पर

एक्सपोज रिपोर्टर @ जबलपुर

विजय नगर स्थित एकता चौक से जाने वाली लिंक रोड पर आए दिन डम्परों को 'हिनहिनाते' देखा जा सकता है। दो दिन पहले सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़क पर जब एक डम्पर कीचड़ में फंस गया और पलटते-पलटते बचा। ड्राइवर और कंडक्टर ने डम्पर से कूदकर जान बचाई। रोड से निकलने वाले भी डम्पर को फंसा देख चकित रह गए। राह पर पड़ी मिट्टी के कारण चक्के आगे नहीं बढ़ रहे थे। नगर प्रशासन दावा करता है कि जहां भी सीवर लाइन के कारण शहर की सड़कों को खोदा गया था, उनका दुरुस्तीकरण का कार्य लगभग पूरा कर दिया गया है, लेकिन निगम के दावों की पोल खुलने में ज्यादा समय नहीं लगता।

महीनों से मुसीबत

आए दिन कहीं न कहीं की सड़क या नाला सम्बधी समस्या सामने आ ही जाती है। सीवर लाइन के कारण खोदी गईं सड़कों का कष्ट शहरवासी कई महीनों से झेल रहे हैं। राह पर आवागमन की दृष्टि से समस्या का सामना करना लोगों के लिए नई बात नहीं रह गई है। सीवर लाइन के कारण खोदी गईं सड़कों और निकाली गई मिट्टी के कारण लोगों को कहीं-कहीं तो भारी नुकसान भी उठाना पड़ता है। बदहाल सड़कों के कारण रोज दुर्घटनाएं हो रही हैं, लेकिन निगम आंखों पर पट्टी बांधे हुए है।

एकता नगर चौक खतरनाक

एकता नगर चौक के दोनों ओर सड़क का नवीनीकरण किया गया है, लेकिन अहिंसा चौक की ओर से आने वाले नाले के पक्कीकरण के काम के बाद सड़क के ऊपर पड़ी मिट्टी को नहीं हटाया गया। इस कारण चौराहे पर आए दिन वाहन फिसल कर गिर रहे हैं। चौक से नाला पंडित ओंकार प्रसाद तिवारी नगर की ओर निकाला गया है। इसके लिए सड़क पर दो बड़ी पुलियों का भी निर्माण किया गया है।

महीनों इस मार्ग पर असुविधा झेलने के बाद लोगों को लगने लगा था कि आने वाले दिनों में इस मार्ग पर किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी, लेकिन निगम ने यहां राहगीरों की व्यवस्था के हिसाब से विचार ही नहीं किया। पुलिया के पहले और बाद में पड़ने वाले बड़े-बड़े गड्ढों के कारण वाहनों के कलपुर्जे तो खराब हो रहे हैं, साथ ही चालकों की कमर भी झटका खा रही है। बारिश में इन गड्ढों पर पानी के कारण और दिक्कत आ रही है।